यादों का रोशनदान

डॉ हरीश सिंह नेगी

BlueRose ONE.com DIY
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Harsh Singh Negi 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com DIY
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publicatioonn,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-6452-077-5

First Edition: May 2025

"नव युग के युगलपंथी"

प्रातः डाल पर चिड़िया चहकी,
कर्ण रन्ध्र[1] में बोल गयी।
हुआ सवेरा नववर्ष का,
भाव सलोने खोल गयी।।

वक्त गुजारा है कांटो में,
शापित अचल विस्तृत बाँहों में।
भर दे हुंकार अब तू भी,
कलयुग की गाथाओं में।।

लूठते आये वर्षों से हम,
अब ना तू लूठते देना।
बँट गया है राष्ट्र सारा,
अब ना तू बटने देना।।

चक्रव्यूह जैसा राजतन्त्र है,
दोषियों का पता नहीं।
चलते रहेगा यूँ ही ये,
जब तक नवयुग जगा नही।।

आज भी हैं भरी अश्रु से,
हजारों माताओं के लोचन।
भूखे हैं उनके बच्चे,
दारिद[2] से नंगे हैं तन।।

नये बरस के नये अहनों में
बदलाव की बयार चलेगी।
क्योकि,
नवयुग के युगलपंथी[3] हम।।

"हरि" अबोध अब क्या करे,
हाथ में लेकर कलम।
जड़ रहा है निज पंक्ति में,
संयुक्त दुख के अमुख सितम।।

बातें उसकी प्यारी–प्यारी,
मेरे मन को डोल गयी।
हुआ सबेरा नववर्ष का,
भाव सलोने खोल गयी।।

प्रातः डाल पर चिड़िया चहकी,
कर्ण रन्ध्र[1] में बोल गयी।

हुआ सवेरा नववर्ष का,
भाव सलोने खोल गयी।।

रन्ध्र – छेद

दारिद– निर्धनता

युगलपंथी– राहगीरों का जोडा

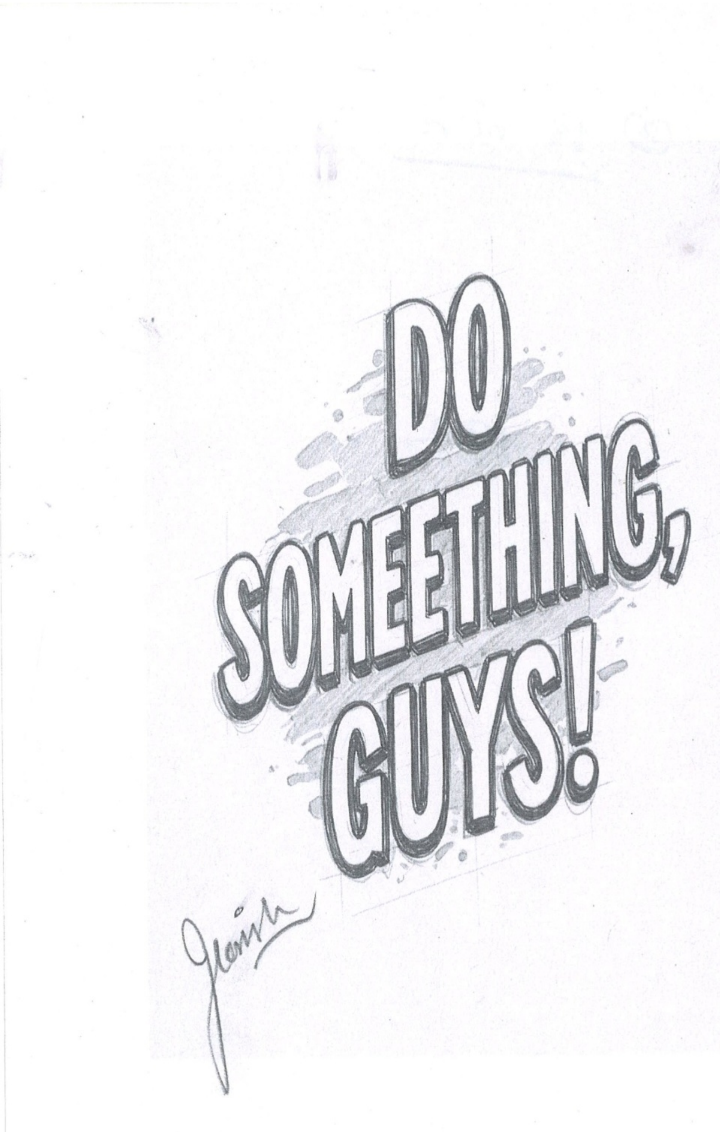
DO
SOMEETHING,
GUYS!

कुछ कर ले

कुछ खा, कुछ पहन,
मत रह तू नंगा।
कुछ पुण्य करके, ऐसे आना,
वर्षों से जैसे बहती है गंगा।।

कुछ कमा, कुछ जमा,
तू है मानव।
आलसी होकर,
बन गया है दानव।।

भूख का नाद,
जन्मा आंतकवाद।
हजारो निरीह[1] बच्चे,
बेघर हुये आज।।

कलयुग का अंश है,
मत बन आदि इसका।
मारा उसी को,
रहम खाया जिसका।।

बहुत कर चुका,
राष्ट्र की निंदा।
इतना कर चूका है कि,
हो जा शर्मिन्दा।।

जितना भी है,
हो जा तू जिन्दा।
अब तो कर ले,
सौगात की चिन्ता।।

हो सके तो बस में,
उड़ना ऐसे।
जैसे नभ में उड़ता है,
प्यारा परिन्दा।।

कुछ खा, कुछ पहन,
मत रह तू नंगा।
कुछ पुण्य करके, ऐसे आना,
वर्षों से जैसे बहती है गंगा।

निरीह – शांतिप्रिय

<u>चुनावी अभियान</u>

चुनावी अभियान

आजादी मिली जबसे हमको,
नेताओं ने चूसा है।
धरती पर उगा नाज[1] कम,
उगता तब से भूसा है।।

मारे नेता, मारे सरताज[2],
हाथो की यह मार नही।
लूठे हमको चुपके– चुपके,
बाते ये बेकार नहीं।।

जब–जब जुल्म ढहे हम पर,
तब–तब गुस्सा फूटा है।
गरीबी का एहसास निरिह,
जनता ने महसूसा है।।

सोने की जगह यहाँ पर,
क्वीला[3] मिलना नामुमकिन।
सिर ताज पहनाया इनको,
गलती की है हमने उस दिन।।

सदियों से आती रहती,
चुनाव की यह बयार[4]।
बुना जाल पाँच सालों से,
अब हो चुका है तैयार।।

सत्ता हमको दे दे जनता,
विकास पर लगेगा मोल्यार[5]।
वादा करके चले गये,
दिखे ना तब से एक भी बार।।

सालो से भूखे हैं ये,
सबको सत्ता का खुमार।
झुकना इनका तब तक है,
जब तक बनी नही सरकार।।

चार इंच की दीवारी में।
हजारों को ठूसा है,
आजादी मिली जबसे हमको,
नेताओ ने चूसा है।।

नाज– अन्न, अनाज

सरताज– श्रेष्ठ व्यक्ति

क्वीला– कोयला, अंगार (गढ़वाली शब्द)

बयार– हवा

मोल्यार– कोपंले फूटना (गढ़वाली शब्द)

आग

सहमी–सहमी सी खबर है,
उमस की दौड़ी लहर है|
देखो ये कैसा कहर है,
आग का ये पहर है||

मई में जैसे ही आया,
हरि को इसने सुलाया|
परि की चिन्ता सूझी,
बचने की बात न बूझी||

ये कहो कैसा असर है,
गर्मियो का ये सफर है|

उफ ये गर्मी, उफ ये गर्मी ,
मेरे जहाँ में ये कैसी गर्मी|
शीतलता की आस जहाँ से,
हवा है, निराश वहाँ से||

देखो ये कैसा कहर है,
आग का ये पहर है|

किसको बताऊँ, अब क्या बताऊँ,
इरादे मेरे साफ हैं।
अब बतलाकर होत क्या,
जब जंगल जलकर राख हैं।।

हताश होकर मैं बताऊँ,
गाँव बना अब शहर है।
प्रकृति में फेला जहर है,
आग का ये पहर है।।

बेवश

रवि ढलकर हुआ अंधेरा,
कुटिया में मेरे नाम का सरोवर।
पिघल गया,
इस गरीब का देखकर।।

मेरे उल्फतों[1] का, साया बिखरने चला।
पर वो दीप भी अब, बुझने चला।।

मै असहाय, उसे घूरने लगा।
पर, मेरी नजरे पहुंची नहीं।
क्योंकि, दीप कब का बुझ चुका।।

काम के उतवार[2] में,
मैं निर्बल अंधेरे में सिसकता रहा।
काश, उगे सूर्य अर्द्धरात्र को,
मेरे पूर्ण कार्य मात्र को।
हो ना सका ऐसा उस पल,
देखकर भाव मेरे गये पिघल।।

काश इस अंधेरे में ,
मैं देख पाता।
कार्य रूपी भवसागर में,
कुछ कर दिखाता।।

उल्फत–प्रेम, चाहत, दर्द

उतवार– धीमापन

सहस

जिन्दगी की पुर[1] यादों से,
मैं सहस कुछ पूछने लगा।
किया क्या मैंने अब तक,
जो कि मैं टूटने लगा।।

शतकाल तेरे इम्तिहान के,
पल हैं मेरे सुजान[2] के।
शब[3] के भंवरों में ना भटक,
आधुयुग में ना मटक।।

हक–दक जिन्दगी से,
मैं सहस कुछ पूछने लगा।
क्या अंक[4] हैं मेरे अंक[5] में,
मैं बहस कर जुझने लगा।।

मेरी फिदरतों[6] का जायजा ले कोई,
मेरे नुक्सों को पिराया[7] दे कोई।
कली में बैठा हूँ कहीं मचलू ना,
इतना तो तो बता दे कोई।।

धैर्य लेकर कलम हाथ में,
मैं सहस कुछ लिखने लगा।
अपने भंवरों की भडाँस को,
निज पंक्ति में गूथँने लगा।।

सुजान – चतुराई, समझदारी
पुर – सम्पूर्ण
शब –रात
पिराया – पिराना देय– दुख देना
नुक्से–कमी
फिदरत– आदत
अंक[4]– नम्बर
अंक[5]–हृदय

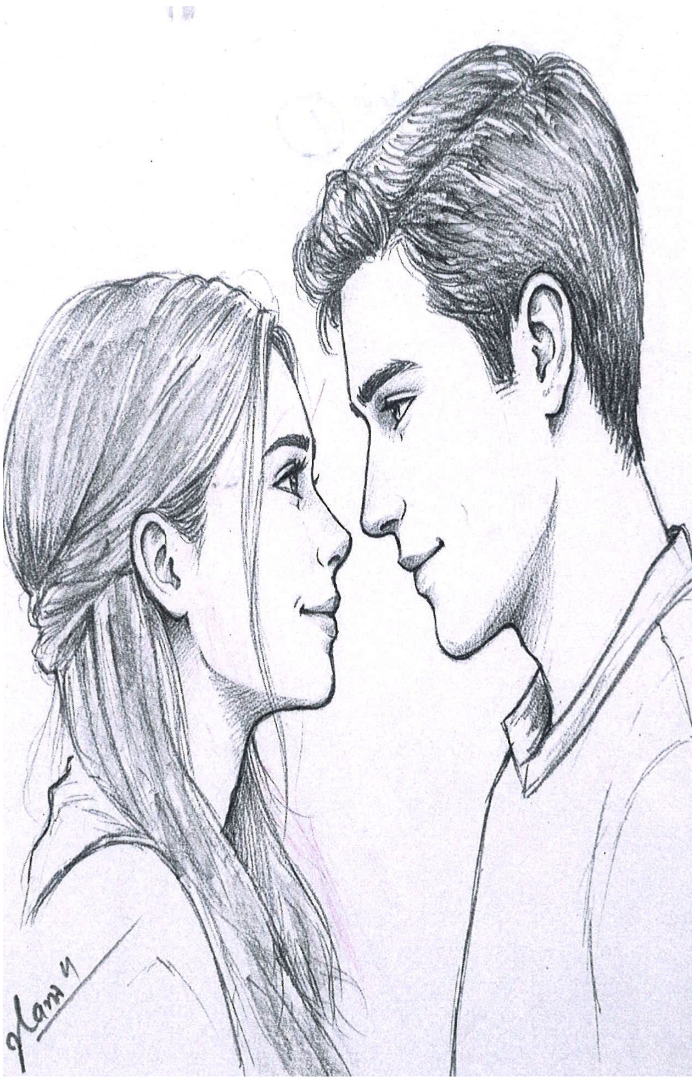

प्रेम भोग– 1

भावों के सागर में,
राज का मन–मोहक दीया था।
अचानक वक्त की बेइश्कदर्दी*,
उसका इम्तिहां लिया था।।

इस कदर डूबा रहा दो सालो से,
पिघलता रहा उसके ख्यालों से।
नजाकत* की दुनिया में परियाँ भी होती है,
उलझता रहा इन्ही सवालों से।।

देखता रहा वह उसे,
जैसे चाँद में खोया हो।
इस कदर शक था उसे कि,
रब ने उसके लिये ही पिरोया हो।।

चाँद पर दाग था पर,
वह चाँद से भी हस्न–ए–कहर थी।
बातों को बेबुनियाद समझा पहले,
हाय, अब तो मची गदर थी।।

हुस्न–ए–तारीफ का पुल बाँधना,
मुझे नहीं आता।
सरसरी निगाहों से उसे सबकुछ बताना,
मुझे नहीं आता।
दुनिया है उसकी दीवानी,
हाय! अब तो यूँ तड़पना मुझे नहीं आता।।

बेइश्कदर्दी– प्यार के दर्द को ना समझने वाला

नजाकत– कोमलता

मेरा गाँव

गाँव के मँझर से,
मैं भागा–भागा आता हूँ।
सोचकर बहुत पर,
कर कुछ नहीं पाता हूँ।।

बैठकर बिस्तर में,
घर मुझे सतायें।
पाण्डवो की लीलावशी,
याद मुझको आये।।

कितना प्यारा गाँव मेरा,
कितनी प्यारी संस्कृति है।
प्यारी–प्यारी लीलायोजन,
कितनी न्यारी कृति है।

देव भूमि को मेरे यारों,
छोड़कर मैं आता हूँ।
सोचकर बहुत पर,
कर कुछ नहीं पाता हूँ।।

मेरे गाँव के छोटे बच्चे,
अचकन रखे उतवार हैं।

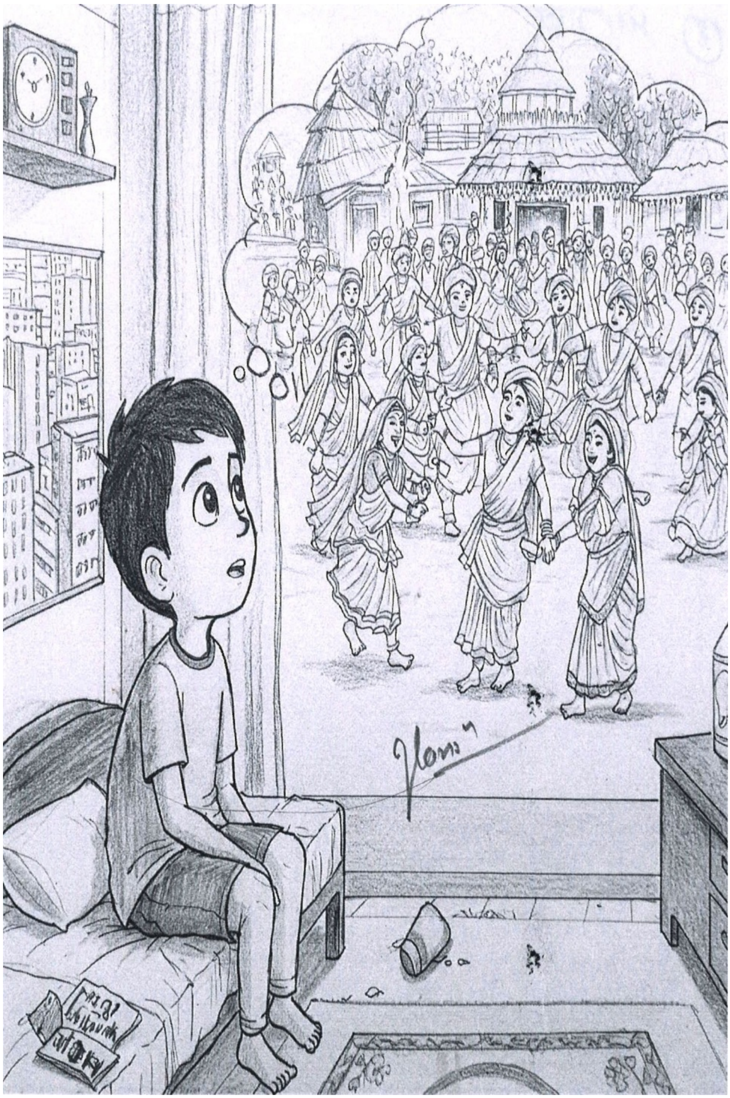

सूत्रधार यद्धुवीर दा का,
देखने को माँये तैयार है।।

दान–पुण्य की लम्बी पर्ची,
अनिल काका पढ़ते हैं।
शुक्रियादा में सबके,
प्यारे हाथ ठिठकते हैं।।

पात्र–परिचय हरेन्द्र दा का,
भाव सबको दुलारा लगे।
बीच में कॉमिक हो तो,
बैठे सबको प्यारा लगे।।

रजपाल भैय्या की आँखो मैं,
तृष्णा के वो भाव नही।
बैठे हैं, वो छप्पर में,
सहयोग में बदलाव नही।।।

मैं बदनसीब दूर हूँ,
करूँ क्या मजबूर हूँ।
विनती हैं पाँच–पाण्डवो से,
रखना खुश मेरे गांववासियो को।

चाहते रहे वो एक एक दूसरे को,
नजर ना लगे उनकी खुशियों को।।

बोर्ड का इम्तिहान है मेरा,
पढ़ कुछ नहीं पाता हूँ।
इसलिये मेरे यारो,
जल्दी–जल्दी घर आता हूँ।।

प्रेम भोग–2

आपने ख्वाबो के मंझर का, मुझे बादल बना देना।
मैं चाहूँ तुझको यूँ, थोडा पागल बना देना।।

ना जाऊँ छोडकर तुझको, जनाजा तू मगाँ देना।
मेरी बातों के साहिल को, थोड़ा दिल से लगा देना।।

मेरी चाहत का न्योता है, मैं तुझे चाहते रहूँ।
तेरे नुक्सों के बातों को, अब मैं कुछ ना कहूँ।।

मेरी ख्वाईश है खुदा से, मैं तुझे भूल ना पाऊँ।
तेरे आँखें के आँसुओं को, देखते ही पिघल जाऊँ।।

न जाने दूरियाँ कब तक, बनी रहती हैं दुनिया में।
मेरे चाहत के पर्चे को, बहा देना तू नदिया में।।

तेरी यादों की बातो से, गजल बन जाती है फिर से।
ये आवाज कहती है, चली आई है ये दिल से।।

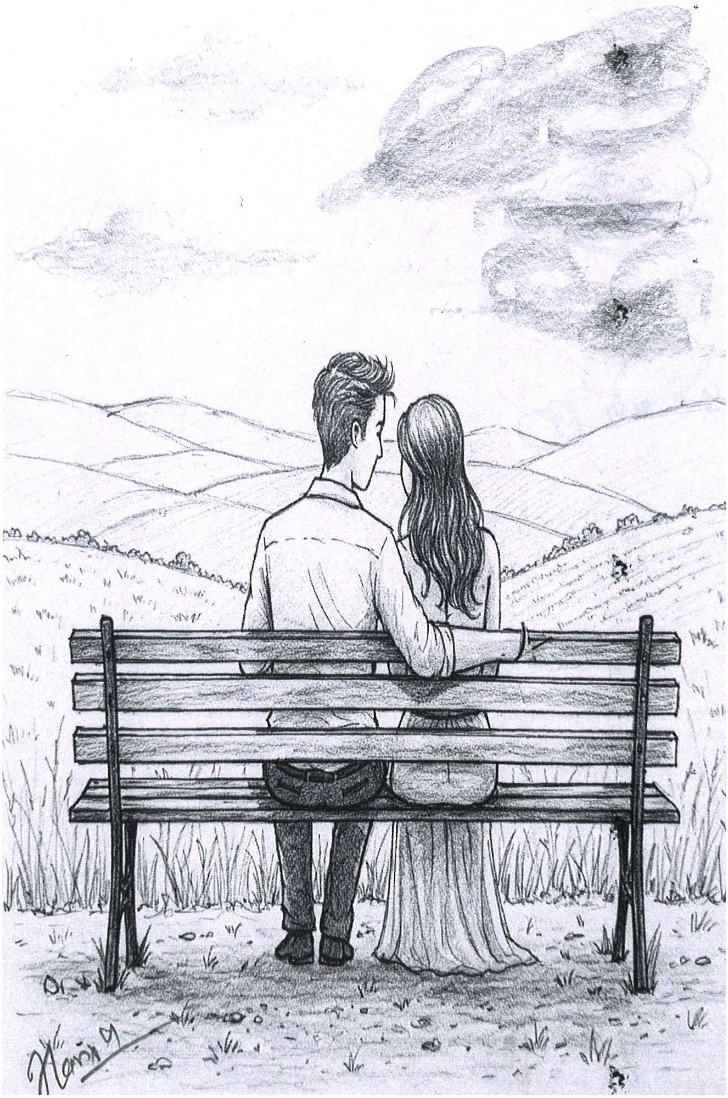

मेरे यारों की गलती से, जो चोटे लगी तुझको।
सहमा–सहमा सा बैठा हूँ, कही तू भूल ना मुझको।।

तेरे पीछे दीवाने सब, मैं खफा क्यों होता हूँ।
तेरे जाने के गम में अब, न जाने क्यों रोता हूँ।।

न जाँऊ रूठ के तुझसे, अब तो मैं यूँ कभी।
तेरी यादों की फिदरत से, तुझे भूलूँ ना कभी।

मेरी जहाँ के अपसाने, तेरी यादें निकलती है।
तेरे साये में बिखरी ये, राते क्यों बदलती है।।

अपने ख्वाबो के मंझर का, मुझे बादल बना देना।
मैं चाहूँ तुझको यूँ, थोडा पागल बना देना।।

आधु–युग

फासलों की आड़ में,
समय भी बदलता चला।
आधु युग को बयार में,
मानव भी बदलता चला।।

बदलते–बदलते सब कुछ बदला,
अब तो संस्कार भी बदलते चले।
जुल्म बड़ते चले, रिश्ते सिकुड़ते चले,
कुछ बिखरने चले, तो कुछ बिगड़ने चले।।

नाराज है प्रकृति,
रूठी है संस्कृति।
कुछ बदला जमाना,
संबल में है कृति।।

आज भी हौंसला है,
उसमें बदलने की कला है।
मान–जा मान–जा ए मानव,
इसी में जग का भला है।।

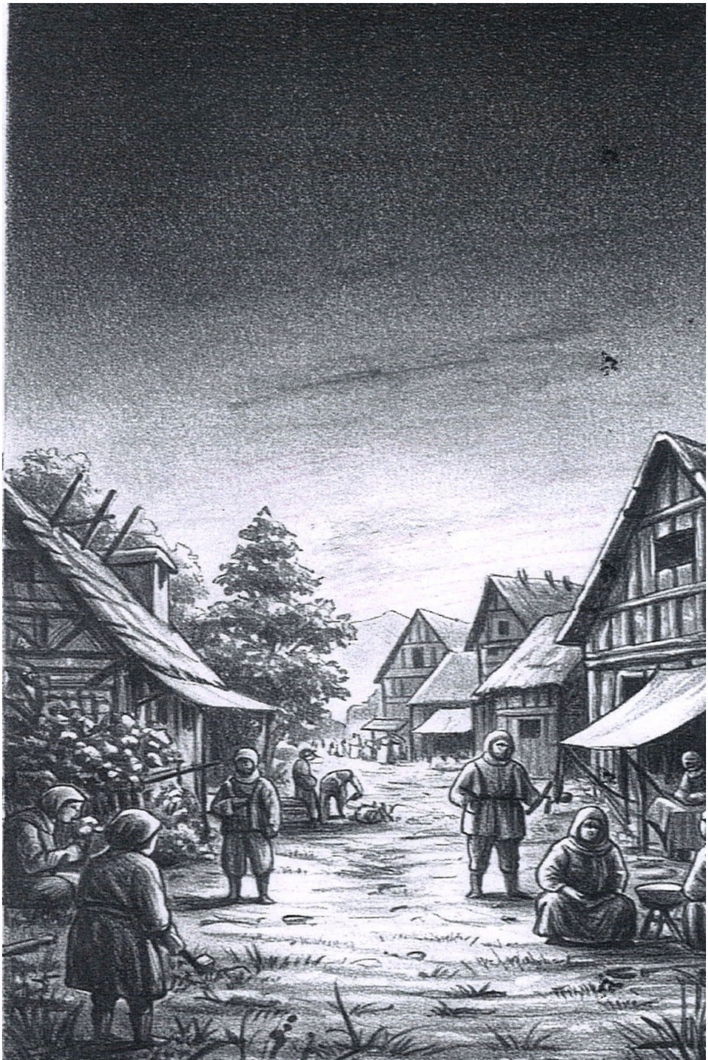

बात ना समझकर ताल में ही,
हाथ सबके ठिठकले चले।
अपने अतीत का ब्योरा,
मानव सब भूलते चले।।

तिलमिलाना था उनका कि,
वो समाज में रहने चले।
बडे नासमझ थे कि वो,
खुद को ही बिखेरने चले।।

संबल*– कष्ट

तिलमिलाना*– झुंझलाना

हाय रे पन्ना

बिन हवा का, उड़ गया पन्ना।
उड़ते–उड़ते, भीग गया पन्ना।।
छिपे थे जिसमें,
आकाक्षाओं के बादल।
डूबे थे जिसमें,
सारे महाबल।।

क्यों की उसने, ऐसी जहालत।
बेरहम दुनिया, तिलमिलाने लगी जो।।

उड़ने के अरमान थे उसके,
परिंदो से सीख लिये।
और कुछ शब्दो ने,
उसके पर भी सींच लिये।।

प्रेम रोग था भाई उसको,
भूल गया कागज है वो।
भाव इतने उमड़ने लगे,
लगा उसे परिंदा है वो।।

उड़ते–उड़ते शरद ऋतु आई,
नभ में उसने सिकुडन खाई।
जैसे ही फुआर पड़ी,
अब भिगापन उसमें छाई।।

छिन्न–छिन्न हुये उसके अंग,
अब टूटने लगा वो।
फिर क्षण–भर में ही,
मिट्टी में मिल गया वो।।

मिटते–मिटते कह गया बेचारा,
यह संसार क्षण भंगुर है सारा।
अरब युक्त आबादी में,
उसे ना मिला कोई सहारा।।

संदेशा था वो भी किसी का,
अर्द्धराह में छूट गया।
प्रेमनगर जाना था उसको,
दर्द आह में भूल गया।।

कोई प्रेम का बेल न बोया,
सब पाले थे लालच के फूल।

मरते–मरते ख्याल अडिग थे,
बन के उड़ा फिर भी वो धूल।।

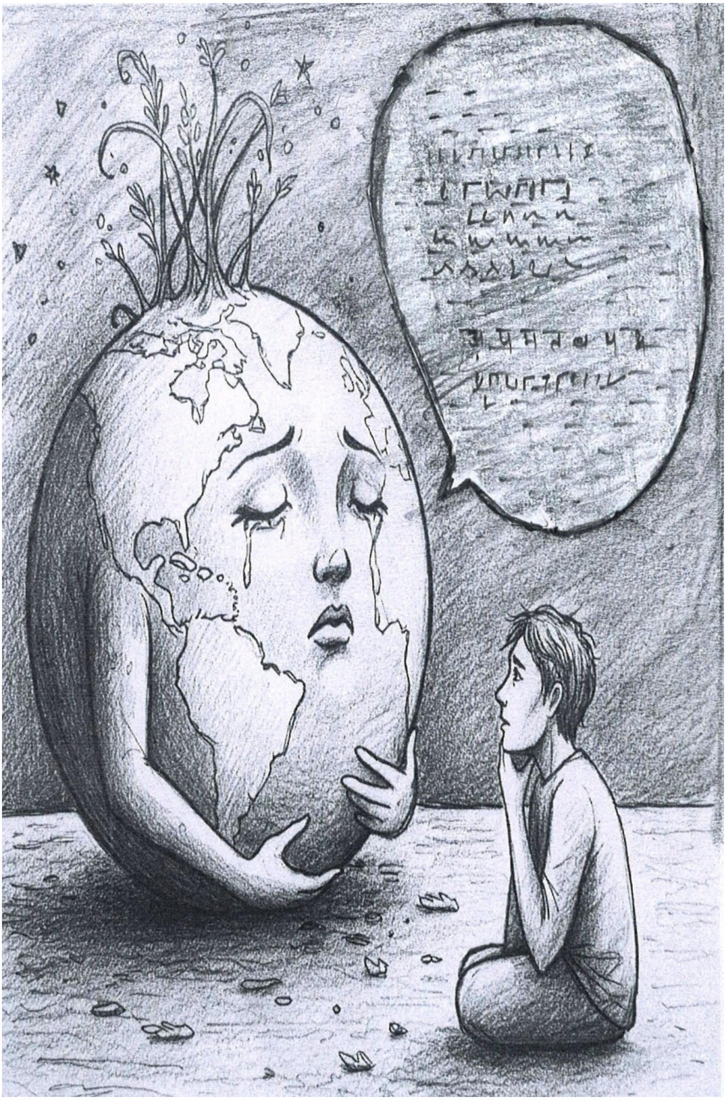

ताप

ताप* है,

ताप है, हे भट* मुझे ताप है।

रूग्ध–क्रन्दन देह सिल में ताप है।

ताप ना ही तपन का मुझे,

ताप ना ही प्लवन–का।

ताप है छत–गगन का मुझे,

ताप विक्षत विपन–का।।

ताप को कैसे सहूँ मैं,

ताप है ही जतन–का।

ताप के तपते ही टूटे,

अंश मेरे बदन–का।

आ चुका है वक्त सारा,

देह मेरी कम्पन–का।।

ताप से बड़ता ही जाए,

दर्द मेरे जिस्म–का।

खुद को ढकने आड़ में वह,

कर गया मुझे नग्न–सा।।

ताप के तपते ही सूखा,
नीर मेरे कोख–का।
खाक करता जा रहा वह,
हृदय उसका नोक–सा।।

पाप करते गया मानव,
फिर कभी वो मुड़ा–ना।
सुधरते ख्यालो को लेकर,
अब कभी को दिखा–ना।

भुल से भी पाप करना,
आज उसका जाप है।
रूठ कर बैठी हूँ मैं भी,
बस यही तो बात है।

ताप है,
ताप है, हे भट* मुझे ताप है।
रूग्ध–क्रन्दन देह सिल में ताप हैं।

भट– वीर
ताप– पीड़ा

वियोग भोग–1

कभी पिया शौक से, कभी तो अनजान थे।
पीते–पीते ना रहे, यार तेरे नाम नाम से।।

जब मिला हर कोई, फुरसत ना काम से।
पीते–पीते ना रहे, यार तेरे नाम नाम से।।

उम्र भर का खौफ है, यारो इस दिल में।
लूठा–लूठा उसने मुझे, अपनो महफिल में।।

कल क्या होगा मेरा, हम अनजान थे।
पीते–पीते ना रहे, यार तेरे नाम से।।

कभी पिया शौक से, कभी तो अनजान थे।
पीते–पीते ना रहे, यार तेरे नाम नाम से।।

लूठने की फिदरत उसकी, हम बेखौफ थे।
बातो ही बातों में, ना किये मौज थे।।

प्यार तो मिट गया, अब हाँ जुबान से।
पीते–पीते ना रहे, यार किसी काम के।।

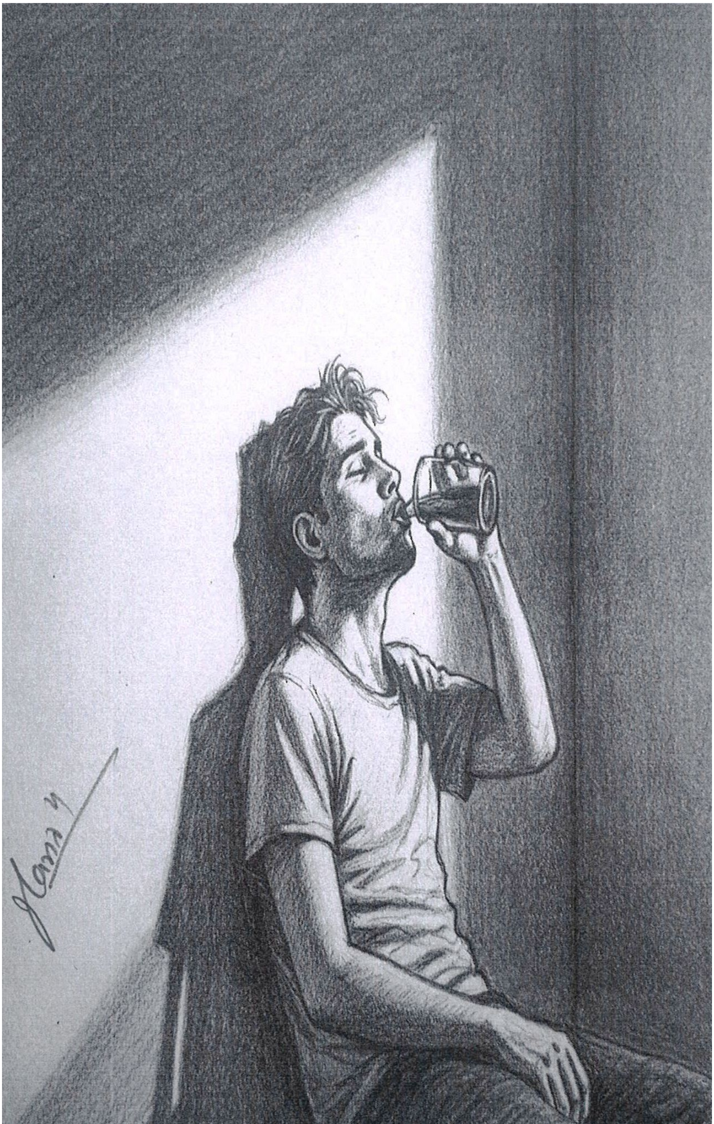

प्यार का तोफा दिया, उसने इम्तिहान से।
कहते–कहते थक गया, मैं इस जुबान से।।

प्रेम रोग हमको है, अब ना गीला करो।
बात बयाँ करनी थी, कभी तो तो मिला करो।।

हमने भी प्यार किया, गलत इन्सान से।
पीते–पीते ना रहे, यार तेरे नाम से।।

कभी पिया शौक से, कभी तो अनजान थे।
पीते–पीते ना रहे, यार तेरे नाम नाम से।।

वियोग भोग–2

दाग कर दिल को, वो दगा कर गये,
हमने ख्वाबो को, पिघलते हुये देखा है।
हमें जीने की जिद ना करना यारो,
हमने मौत को करीब से गुजरते हुये देखा है।।

कभी आसियाने में धूप तो,
कभी ठण्ड से सिकुड़ते देखा है।
हमने ख्वाहिशों की लाशों को,
ताबूतों में गढ़ते हुये देखा है।।

इस सोई हुई जुबान को,
सिसकते हुये देखा है।
खुद के ही जनाजे को,
उसके लिये तरसते हुये देखा है।।

ख्वाबो को, क्यों सजा रहे थे हम।
उनके ख्वाबो में हमने,
किसी और को टहलते हुये देखा है।
हमें जीने की जिद ना करना यारो,

हमने मौत को करीब से गुजरते हुये देखा है।।

हमारी शिनाख्त* ना कर सके वो,
उन्होंने महरूमियत* में हमको गिरते
हुये देखा है।
उनको भुलने की दुआ करते हैं यारो,
हमने उन्हें किसी और के सपने बुनते हुये
देखा है।।

शिनाख्त*–पहचान करना

महरूमियत– बर्बादी

वियोग भोग – 3

मैं पागल प्यार कर बैठा,
जिन्दगी को रिझाने चल बैठा।
रेतों की पहाड़ी पे वो कुआँ,
मैं प्यास बुझाने चल बैठा।।

देखा वो समन्दर दूर तलक,
अब आँखे मेरी ढह गई।
ना बन इतना पागल तू,
वो चुपके से कानों में में कह गई।।

मदहोश हुआ मैं अब तो यूँ,
ख्वाबो में उसके बह गया।
दर्द–सा मुझको होने लगा,
मैं चुपके–चुपके सह गया।।

चलते–चलते उस खाई में,
वो राज में इक दिन खोल गया।
चाहने लगा हूँ मैं, तुझको,
यारो ये बात मैं बोल गया।।

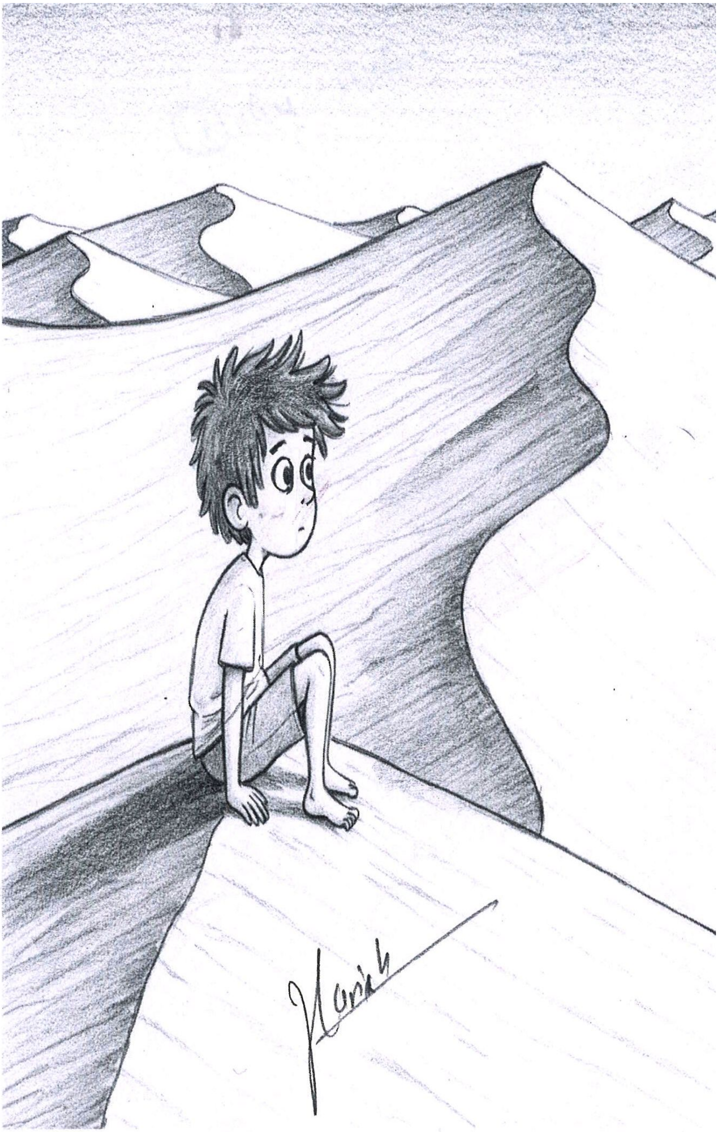

पहले तो कतराने लगी वो,
तब धीरे–धीरे मान गई।
लगने लगा मुझको ऐसा,
वो प्यार मेरा पहचान गई।।

लाखों फिदा थे उस पर यारों,
राज वो ऐसा जान गई।
दिल मैं तोड़ूँगी इसका,
वो मन में ऐसा ठान गई।।

पाने की ख्वाईश लेकर यारो,
दूर कहीं मैं चल बैठा।
तोड़ चुकी वो सपने मेरे,
सुनकर अब में पिघल बैठा।।

फूट–फूट के रो मैं पड़ा अब,
ख्याल मैं उसका जान गया।
चाल चली थी कैसी उसने,
यारो मैं तो मान गया।।

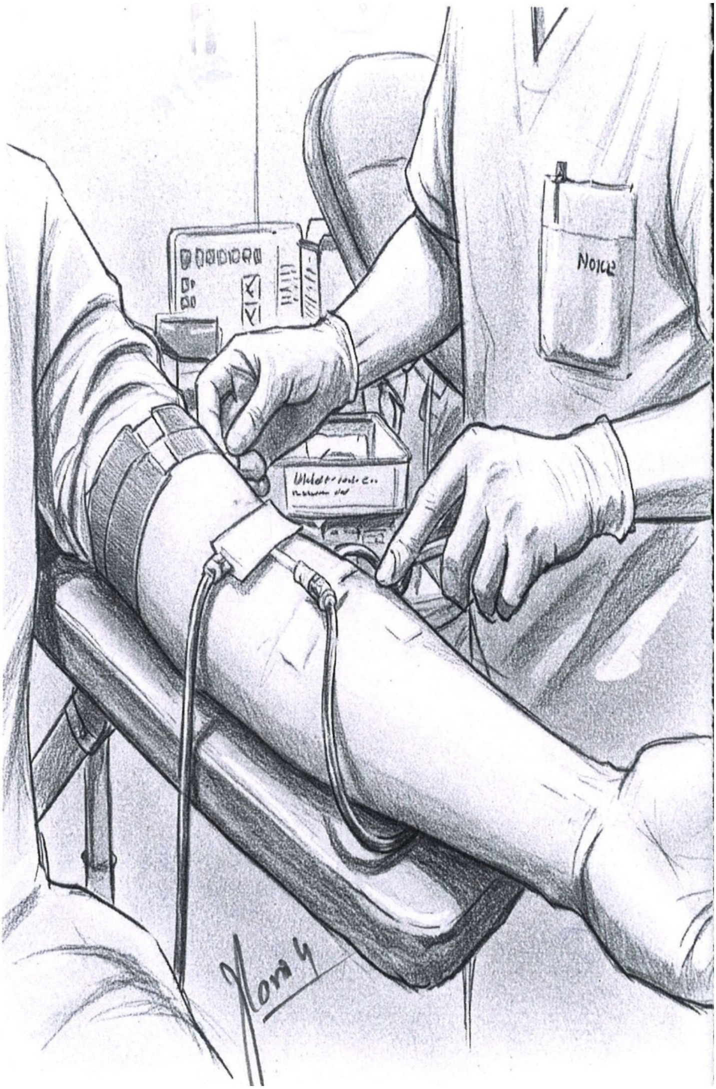

<u>ख्वाईश</u>

अब ये लहू दौड़ेगा,
हर शक्स के रग–रग में।
धड़कने याद करेगी उसकी,
मुझे जीवन के पग–पग में।।

वो न सही उसकी धड़कने,
वाकिफ होंगे मेरे हर राज से।

जिसमें छीपी होगी,
दुलार के बदले माँ की धुतकार।
कुछ किताबों के बदले, पापा की फटकार।।
स्नेह के बदले, बहिन की बददुआई का प्रहार।
प्रेम के बदले, प्रेमिका की रुसवाई का शिकार।।

क्योंकि,
मैं इक अच्छा बेटा ना बन सका।
उनके सपनों के बदले, उन्हें कुछ ना दे सका।।

क्योंकि,
मैं एक अच्छा, भाई ना बन सका।
उनके ख्वाबों का, हमराई ना बन सका।

क्योंकि,
मैं इक अच्छा, प्रेमी ना बन सका।
इश्क–ए–इम्तिहान में कामयाब ना हो सका।।

बस अब इक दीया,
जिसमें दादी का आशीष निहित तेल।
और संस्कारित रूई,
से जलते जा रहा हूँ।
इस लहूँ को रग–रग में,
पहुँचाने की साजिश किये जा रहा हूँ,
किये जा रहा हूँ।।

गिरता गहल

दुःख ने निगला है आज,
कभी खुशी की लहरों में झूम लिया करते थे।
खुद खुश नही हैं आज,
कभी दुनिया में खुशी का आगाज किया करते थे।।

तैर नही पाते आज,
कभी किताबों में डूबा करते थे।
चंचलता में समाई है तस्वीर हमारी,
कभी हम भी गम्भीर हुआ करते थे।।

हजारों कोस दूर है,
कभी उन बिन रहा न करते थे।
अरमानों की कद्र न थी उनको,
तो सपने क्यों दिखाया करते थे।।

मिट्टी भी ना मिली,
पैरो तले आज।
कभी अम्बर चूमने का,
खवाब लिया करते थे।।

शोलों सँग ठण्डे पड़े हैं ,
कभी इस दिल में तेरे लिये आग लिया करते थे।
खुद खुश नही हैं आज,
कभी दुनिया में खुशी का आगाज किया करते थे।।

आधा अनपढ

माँ आधा अनपढ़ मैं हूँ,
माँ आधा अनपढ़ मैं हूँ।
नाकाम हुई हिन्दी जंहा,
मैं ठहरा उस गढ में हूँ।।

कहां गये वो राँहें,
जो मेरे वतन को जाती थी।
कहाँ गयी वो धरती,
जो हिंदुस्ता कहलाती थी।।

कहाँ गये वो वीर,
जो "इंकलाब" कहा कहते थे।
कहाँ गये वो रणधीर,
जो अन्याय सहा ना करते थे।।

भूल चुका हूँ वो गाथा,
जो भारत कुल के गाते थे।
भूल चुका हूँ वो पहलू,
जो उत्सुकता जगाते थे।।

टूटी हुई भाषा भाषा का,
छूटा हुआ धड़ मैं हूँ।
माँ आधा अनपढ मैं हूँ,
माँ आधा अनपढ मैं हूँ।।

नाकाम जंहा है हिन्दी,
मैं छूटा उस गढ़ मैं हूँ।

कुछ खोये पत्ते मिले आज,
वो परेशान मुझे कर गये।
है कहाँ भाषा मेरी,
दुःखलीन मुझको कर गये।।।

लिखा था उन पर ए इन्सान,
स्वभाषा भूल चुका हिन्दुस्तान।
तब सूघाँ इस धरती को कि,
किस बू ने बदल दिया।
सत्कार, सद्भाव व बोली को,
पश्चिमी में ढल दिया।।

अफसोस करे "हरशू",
पश्चिम की जड़ मैं हूँ।
पहचान सके ना जो हिन्दी,
माँ वो आधा अनपढ़ मैं हूँ।।

वियोग भोग–4 (याद)

आज फिर उनकी,
याद आ रही है।
होली के रंगो में,
मायूसी–सी छा रही है।।

वर्षो पहले का लम्हा,
फिर दिल को कुतर रहा था।
मैं जिन पलों में,
संग उनके चल रहा था।।

हम भी अपने आँगन,
वो भी अपने आँगन,
और मौसम बदल रहा था।
वो होली संग खेलें,
मैं इतंजार कर रहा था।

आना था घर पे उनको,
मैं करवटे बदल रहा था।
क्यों नही आयी सजनी,
अब मैं सिसकियाँ भर रहा था।।

रंग गयी थी सजनी,
किसी और के रँगने में।
क्या रखा था अब,
हमारे अँगने में।।

तब की होली,
और अब की होली,
मौसम शिथिल* गया था।
लौट कर वो आयें,
मैं इंतजार कर रहा था।
मैं इंतजार कर रहा था।।

शिथिल– सुस्त हो जाना

निराशा की बूँदे

हताश होकर घर लौटा हूँ,
निराश होकर पर लौटा है।
दुर्घनाओं के जंजाल से,
कम से कम घर तो लौटा हूँ।।

देखा कराहते उसे आज,
जिसे बेरहम ट्रक ने कुचला था।
यारो वह इन्सान नहीं,
एक अनाथ कुत्ता था।।

बीच सड़क पर गिरा वो,
दर्द के मारे विलक रहा था।
देखकर उसे हृदय मेरा,
आँसूओं से छलक रहा था।।

ले जाँऊगा चिकित्साला इसे,
अब मैं पर्स टटोलने लगा था।
इलाज के दौरान कहाँ रखूँगा,
मन में ख्याल ये आने लगा
था।।

छोड़कर मैं भी आम आदमी बन गया,
सोचत–सोचते कुछ कदम चल दिया।
फिर उछाला सिक्का मैंने,
देखा तो चित[1] आया था,।
समस्या को चित[2] करने लौटूँ,
मन मेरा भी भाया था।।

हताश होकर घर लौटा हूँ,
निराश होकर पर लौटा है।
दुर्घनाओं के जंजाल से,
कम से कम घर तो लौटा हूँ।।

मेरा चित[3] आने से पहले,
चित[2] बेचारा हो गया था।
हताश करके मुझको वो,
वहीं सड़क पर सो गया था।।

घनघोर हुई आज निराशा मुझे,
इन्सानियत का फर्ज,
अदा ना कर सका उसे।।

आज अपनी ही कहानी में,

मैं आम आदमी बन गया।
अपनी ही नजरों में,
टूटकर मैं बिखर गया।।

चित[1]– सिक्के का एक भाग (हैड)

चित[2]– समाप्त या खत्म हो जाना

चित[3]– मन

अभिलाषा सपनो की

पूछ रहाँ हूँ सबसे मैं,
तुम क्यों सोया करते है।
क्षणिक मात्र के भम्रित पलो में,
कैसे खोया करते हैं।।

अरसे गुजर गये मेरे,
सपना कोई ना देखा मैंने।
अठारह बसन्त काट चुका मैं,
अपना कोई ना देखा मैंने।।

अब तो सपने यादें बन गई,
यादों में पुरवाई* छा गई।
मेरी जन्नत के तोहफो को,
किसी की रूसवाई* खा गई।।

गुट मे बैठे सभी परिजन,
रेनु* की बाते करते हैं।
टकटकी से सुनते ही,

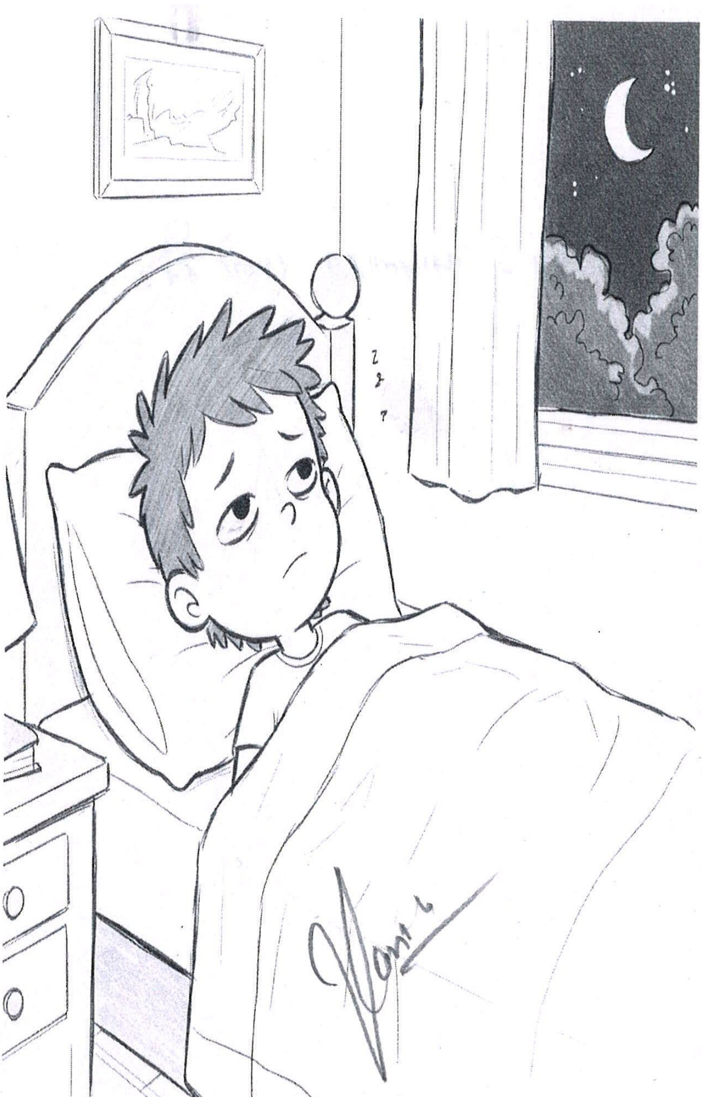

आस्था की आहें भरते हैं।।

मूक* बैठा कोने पे मैं,
सबके नैन निहारा करता हूँ।
प्रातः उठकर कुछ नही बोलता,
मैं खुद को पिराया* करता हूँ।।

प्रतिप्रातः* का अनुभव जैसे,
विद्यालय का गृह कार्य,
गुरु ने ज्यादा मुझे दिया हो।
निकम्मा, निठल्ला हूँ मैं,
जिसने कुछ ना याद किया हो।।

इन्तजार है उस सुबह का,
जब उठकर मैं चिल्लाऊँ।
दादी– दादी सपना आया,
बारी–बारी सबको सुनाऊँ।

गुजर–बसर कर, दौड़–धूप कर,
आखिर फिर सोया करता हूँ,
सपनो की राहों में,

भावो के पुष्प–गुच्छ को,
अभिलाषा से पिरोये रखता हूँ।।

पुरवाई– ठंडी हवा

रूसवाई– नराजगी

मूक– चुपचाप

प्रतिप्रातः–प्रात: काल

रेनु– रात

"सुन ए दा"

आज भी सो रहा हूँ दा*,
कल भी सोया था।
जिन्दगी की राहों पर,
मैं न जाने कहाँ खोया था।।

भम्रित हूँ लक्ष्य बिन्दु से,
जो मैंने कभी बोया था।
भूल चुका हूँ राह शिखर की,
जिसे सपनों से संझोया था।।

अब तो एक सरफिरा हूँ,
हजारों उलक्षनों से घिरा हूँ।
तमन्ना ना है उठने की आज,
क्योंकि उठकर फिर गिरा।।

इन्द्रीसुख भाने लगे हैं,
नयन सरमाने लगे हैं।
पैरों की बेड़िया खुल गई,

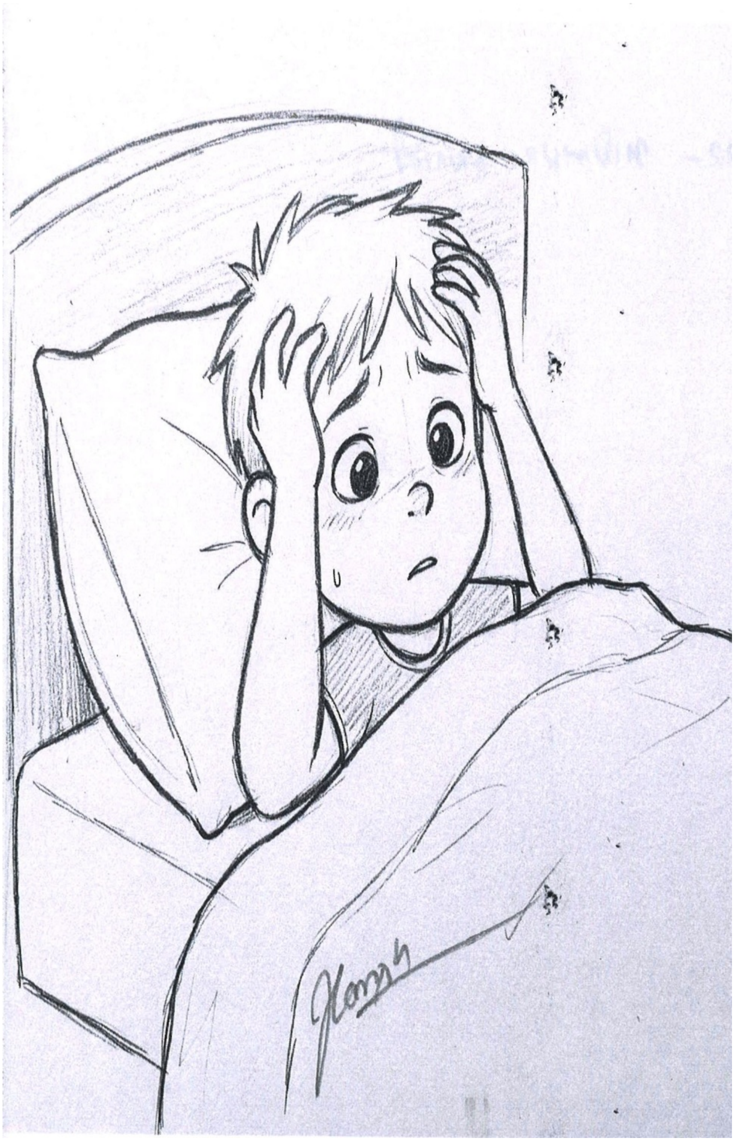

नित्य देह घुमाने लगे हैं।।
कब जागूँगा "दा" मैं,
ये उम्र निकलती जा रही है।
कब सुधुरुगाँ "दा" मैं,
बात ये खलती जा रही है।।

खो चुका हूँ खुद को मैं,
न जाने क्यों प्यार में।
बाबला हो गया हूँ,
किसी के इन्तजार में।।

धकेला है पापा ने "दा",
बी0एस0सी0 के मझदार में।
आंग्लो का राज यहाँ,
कैसे लगूँ पार मैं।।

मिला यार पुराना आज,
कर रहा था एन0आई0टी0 था वो।
उसके चेहरे से झलक रहा यूँ,
मंजिल के काफी करीब था वो।।

बहुत गहरा डूबा हूँ दा,
अब उठना चाहता हूँ।
कसूर मेरा क्या था पापा,
मैं पूछना चाहता हूँ।।

खुद पर ना है वश मेरा,
मैं कुछ भी कर जाता हूँ।
बनते काम बिगड़ते हैं जब,
तब दा मैं पछताता हूँ।।

दा– दादी के लिए किया गया संबोधन

हड़कम्प

काले राज का काला पैसा,
जिसने चाहा उसने ऐठां।
छुपते–छुपाते ले गये वो,
स्विस बैंको में सबने फैंका।।

देखे सोनिया लेवे झप्पी,
बाबा, भाजपा, मारे गुप्पी।
किसको मरवाऊँ, किसको बचाऊँ,
मनमोहन जी साधे चुप्पी।।

इक्कीसवीं सदी में राज करे राजा,
2-G स्पैक्ट्रम पर निशाना साधा।
सी0बी0आई0 करे घोटाले ताजा,
न्यायालय बोले "हवा–ए–जेल" खाजा।।

आजादी के संघर्षो से,
थक चुका है, हिंदुस्तॉ सारा।
अब भष्ट्राचारियों ने,

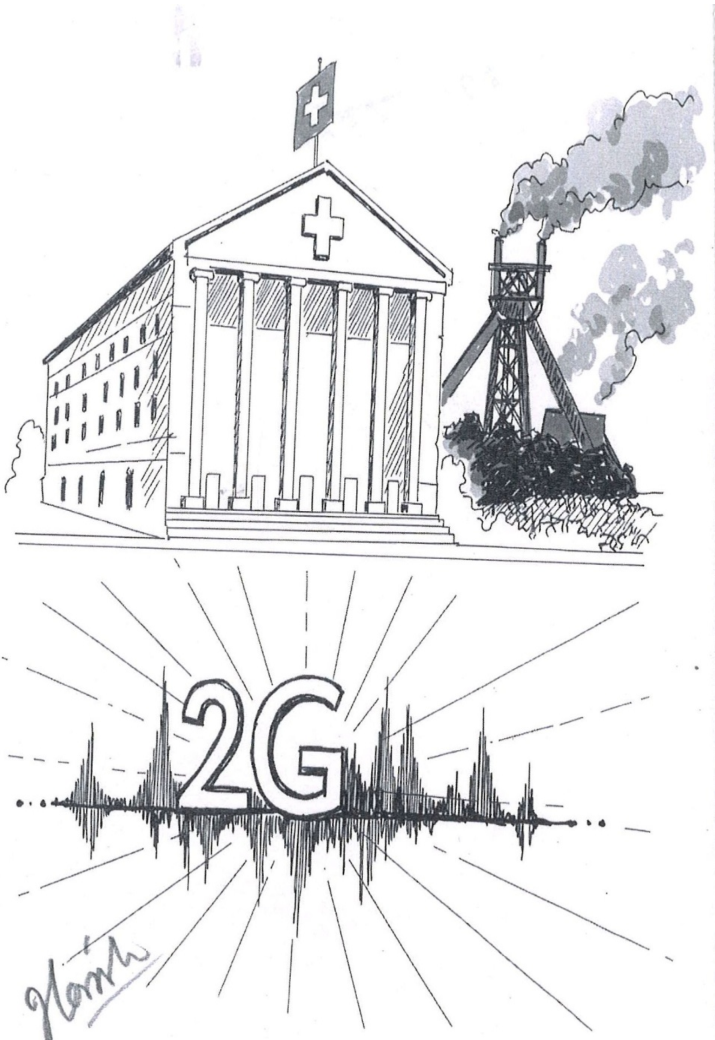
2G

महंगाई से है, इनको मारा।।

आये लालू—उड़ा गये सारा,
कुछ ना मिला तो खा गये चारा।
सता का पत्ता निकला जैसे,
कहा बिहार मेरा है, बाड़ का मार।।

कलमाड़ी जी कमर तोड़ गये,
कामनवेल्थ का पैसा सतोड़ गये है।
जाँच होते ही सब कुछ छोड़ गये,
तिहाड़ जेल से रिश्ता जोड़ गये।।

चारो तरफ मंचा हड़कंप था,
भारत में आया घोटालों का भूकम्प था।
कहीं ना कहीं मानो या ना मानो,
इसी सता पे लगा जंक था।।

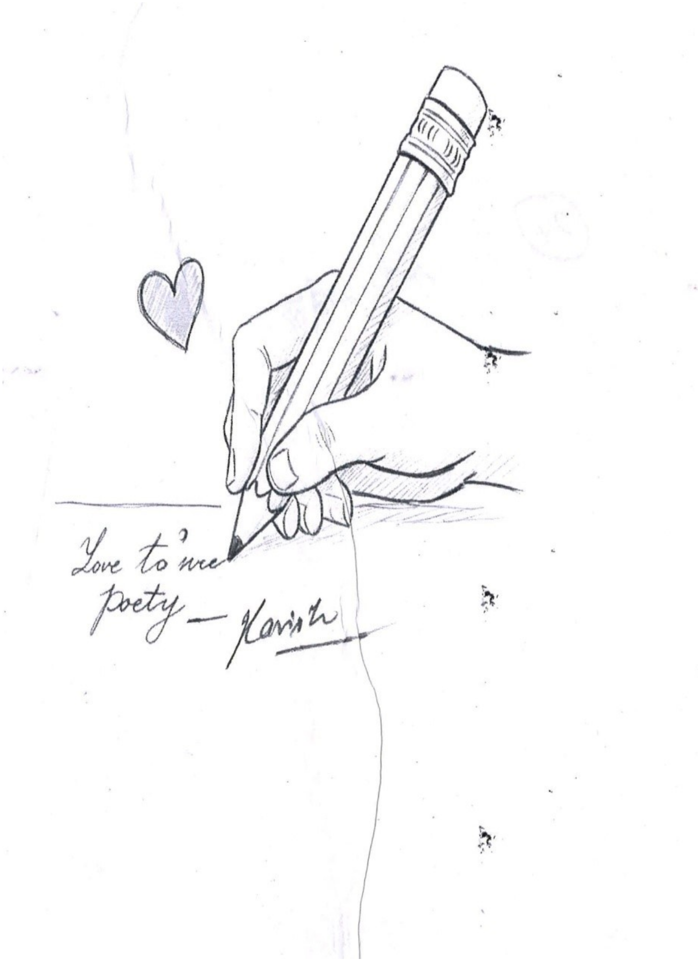
Love to
poety — Kavish

मेरी कविता

ए वेबफा जा–जा,
अब तो हमें भी प्यार है।
कभी तेरा तो,
आज उसका इन्तजार है।।

आज हर दुखड़ा, उसको सुनाता हूँ,
रात–रात को नींद न आये,
उससे में बतियाता हूँ।
अब तो ना दीदी डाँटे, ना मम्मी टोक,
उसको सबसे मैं मिलवाता हूँ।।

आज मेरी आखों में,
मेरे हर ख्यालो में,
मेरी सोच की सोच में।
और दिल के गलियारों में,
बस उसी का आसियाना है।।

हर सुबह, हम नैन लड़ाया करते हैं।
तेरी खोटी दुनिया को,
हम पाठ पढ़ाया करते हैं।।

तेरे होने पर भी वो साथ थी,
तेरे न होने पर भी वो साथ है।
मेरे हर ख्याल को, लब्ज बना देती है,
मेरी कविता की यही तो खास बात है।।

#हाय रे लॉकडाउन

सब्र के पत्थर फिसलने लगे हैं,
दिन–ब–दिन हालात बिगड़ने लगे हैं।
अब ना वो (corona) रुकेगा, ना हम रुकने वाले,
लोग सड़कों पर निकलने लगे हैं।।

सोचा तो था, सब जीत आयेंगे।
किसको पता था, आधे रास्ते से लौट जायेंगे।
आज किसी को नही शिकायत यहां,
कहते हैं, जितना मिले उसी में काम चलायेंगे।।

कल तक तो सबको शहर जाना था,
और आज सब गावँ जायेंगे।
सालों तक न थे जो दूर दूर तक याद,
आज जाकर उनको ही मनाएंगे।।

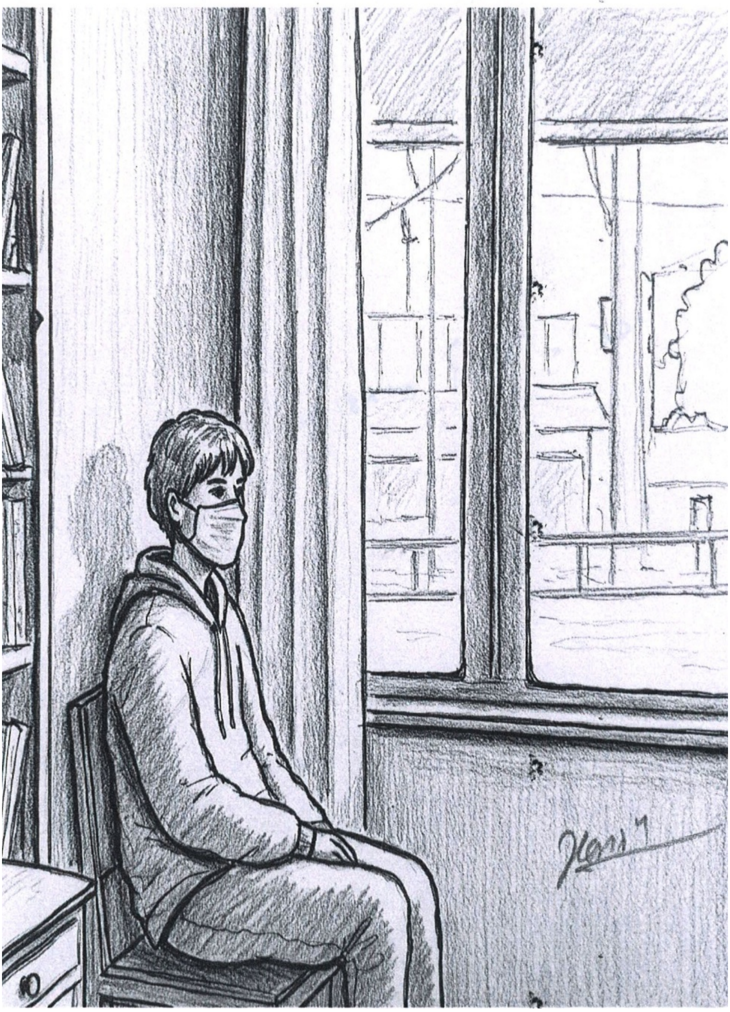

जब हमारे भी दिन लौट आयेंगे,
हम भी अपने पहाड़ जायेंगे।
बचपन के हर यादों को,
फिर से गले लगायेंगे।।

पुराना है लेकिन घर तो है,
जाकर मरम्मत करवायेंगे।
उन बंजर खेतों में जाकर,
फिर से मरहम लगायेंगे।।

कूलर, फ्रीज और एसी से
हम दूर हो जायेंगे।
ठण्डी–ठण्डी हवाओ संग,
गरम चाय चुस्कायेंगे।।

रोज–रोज जंगल जाकर
काफल–हिसुल चटकाएंगे।
चुन्डो, गुच्छी, क्रिकेट खेल,
फिर से समय बिताएंगे।।

प्रदूषण ना शोर–सराबा,
दूर–दूर चिल्लाएंगे।
बहुत खा लिया ओवेन का खाना,
अब चूल्हे में पकाएंगे।।

यहाँ सब मिलावटी खाना,
जाकर कोदू–बाडी खायेंगे।।
यहां लोग गर्मी से मरते,
वहाँ रजाई में सो जायेंगे।।

जब हमारे दिन भी आयेंगे,
हम भी पहाड़ जायेंगे।
बचपन के हर यादों को,
फिर से गले लगायेंगे।।

आखिर वो भी

आखिर वो भी छोड़ गई,
मुझको मेरे हाल पे।
दिल की बात तो क्या ही करूँ मैं,
तमाचा था गाल पे।।

काम–काम को लेकर उसका,
हर बार बहाना लगता था।
माफी थी उसको सदा की,
क्यूँकी साथ सुहाना लगता था ।।

और वो बोला करती थी–
हर पल तेरे पास रहूंगी,
जान से ज्यादा प्यार करूंगी।
कैसा भी हो वक्त हमारा,
तेरे लिये मैं सबसे लडूंगी।।

बात रूहानी लग रही है?
ना जाना इस ख्याल पे।
आखिर वो भी छोड़ गई,
मुझको मेरे हाल पे।।

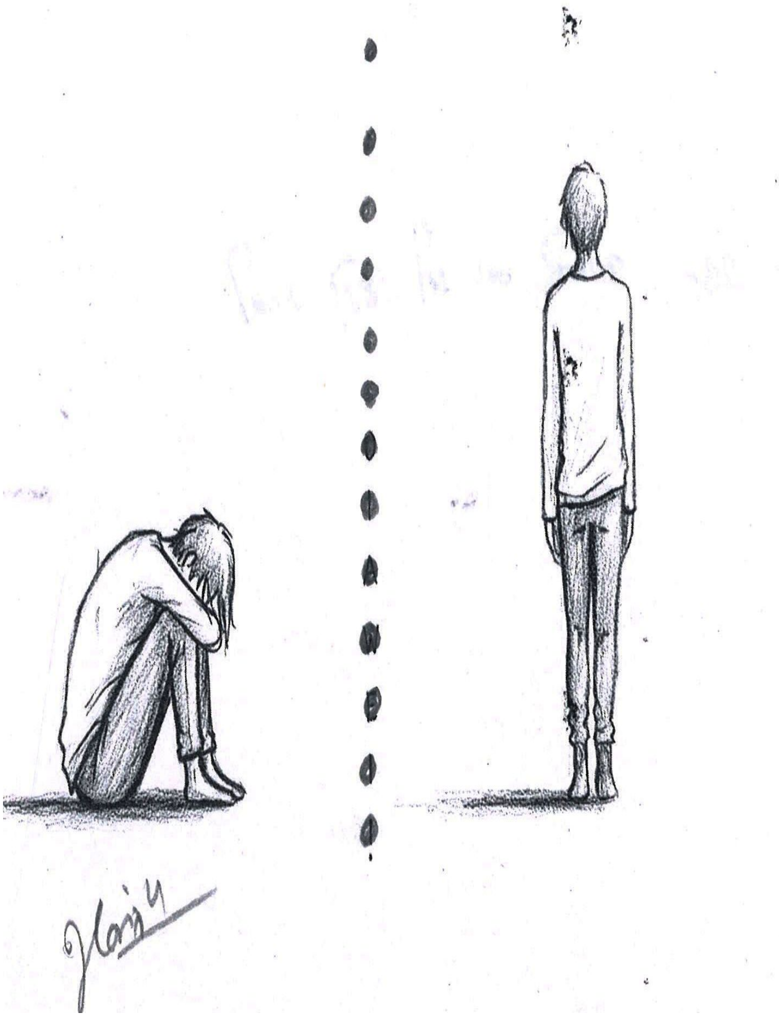

हद बेहद का प्यार था यारों,
सपनो का संसार था वो।
बेशक, पहला नही कहूगाँ,
लेकिन आखिरी वाला प्यार था वो।।

भरोसा कैसे कर लें यारा,
प्यार के इस जंजाल पे।
आखिर वो भी छोड़ गई,
मुझको मेरे हाल पे।।

यूँ लाँघ गया था सारी सीमा,
सोचा था संग होगा जीना।
रूक जाते थोड़ा साथ मेरे
रखता मैं कोई कमी ना।।

जिसके लिये सबसे लड़ा हूँ
देखो आज तन्हा पड़ा हूँ।
जिस्म जमी पे गिर जाता कबका
बस कलम टीकाये मैं खड़ा हूँ।।

आखिर वो भी छोड़ गई,
मुझको मेरे हाल पे।

दिल की बात तो क्या ही करूँ मैं,
तमाचा था गाल पे।।

पहाड, पलायन और लॉक डाउन

तेरे शहरी होने का ये झूठा गुमान,
दो छोटे–छोटे से कमरे और वो सटे–सटे मकान।

तेरी वो 5G की ख्वाईश,
सरेआम इंसानियत की नुमाइश।

तेरा सुबह उठकर लेना बी.पी दवा,
और ऊपर से लेना बिषैली हवा।

हर रोज बाँध रस्सी कुत्ते बिल्ली घुमाना,
फिर वो मिलावटी रिफाइंड युक्त खाना।
तेरा वो देर रात तक खुद को जगाना,
वीकेंड के नाम पर खुद को ही झुलसाना ।।

क्यों बात मेरी तू नहीं मानता,
सच बता तुझे उस शहर में कौन जानता ?

चल आजा ना,

आखिर रखा ही क्या है,
उन भीड़ भरे बाजारों में।
देख लॉक डाउन में भी आजाद हैं,
लोग इन पहाड़ों में।।

मशगूल

तेरा यूँ मशगूल रहना तो, बस एक बहाना है।
सच तो यही है कि तेको, पास ही नही आना है।।

भूल मत एक दिन ये वक्त भी बदल जाना है।
जितना परोसा है खुद को तेरे लिए।
फिर इसके आधे का भी आधा रह जाना है।।

अच्छा चुनाव है आपका,
कभी इस काम का तो, कभी उस काम का।
कल और मुश्किल होगा ये सब संभाल पाना,
क्योंकि वक्त आपके हिस्से का आधा रहा जाना है।।

अकेले ही संभाला है मैने रिश्तों को,
समेटा ही है हमेशा धागों के गुच्छों को।
क्या तुम भी करोगे इतनी जद्दोजहत
या फिर छोड़ हाल पे जाओगे?
होने दोगे बर्बाद सपनों के आशियाने को,
या फिर अच्छे से संभाल पाओगे?

असर हो या न हो मेरे शब्दों का,
सबको अपना अपना किरदार निभाना है।
वक्त पे समझ जाओ तो ठीक,
वरना बस काश ही काश रहा जाना है।।

जिंदगी

क्या हर चीज को पाना,
दुनिया को अपने हिसाब से चाहना।
हर जंग जीत जाना,
हर दौड़ मे सबसे आगे आना।।

क्या यही है जिन्दगी?
ना बाबा ना।

जो ना मिले उसमे में भी,
खुश रह जाना।
कभी कभी दुनिया का भी हो जाना।।
हार कर भी, खुद से जीत जाना,
बुरे समय के साथ, हँस के लड़ जाना।
सबको खुद का और, खुद सबका हो जाना।।
गिरते को उठाना, रोते हुये को हँसाना।
ना रोए, ना सोये, कोई खाए बगेर,
भूखे के लिये खुद लूट जाना।
असल में यही है जिन्दगी का तराना,
चलना है चलाना है।
बस हँसते जाना है, हँसते जाना है।।

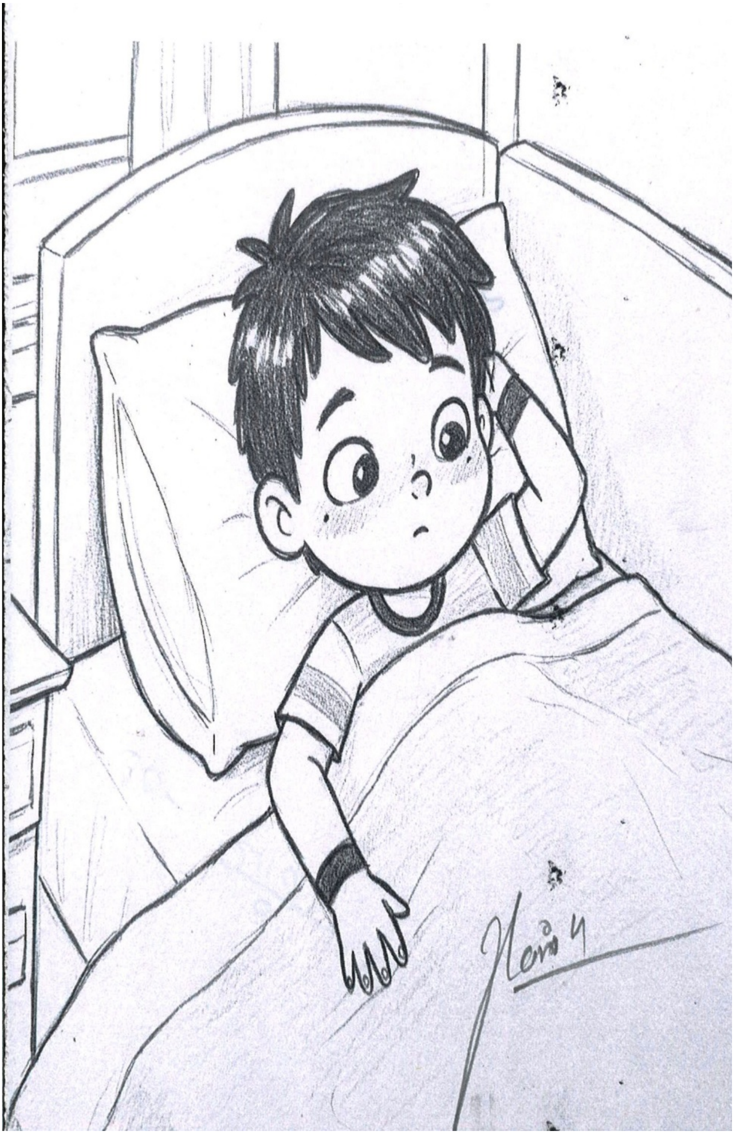

यादें

कुछ खट्टी–मीठी बातें,
मन बैचेन किये जाती है।
अतीत की झलकियों में,
कुछ तस्वीरें नजर आती हैं।
ये यादें ही हैं,
जो अक्सर हमें याद आती हैं।। उन चेहरों की दुश्मनी है, शायद,
जो होठों पर मुस्कान कम,
और काश ज्यादा लाती हैं।
ये यादें ही हैं,
जो अक्सर हमें याद आती हैं।।

अच्छा वक्त सम्भाला नहीं जाता,
और काश में जिन्दगी गुजर जाती हैं।
ख्वाईशों का तो पता नहीं लेकिन,
मलाल में जीने की आदतें–सी बन जाती हैं,
ये यादें ही हैं,
जो अक्सर हमें कमजोर बनाती हैं।।
क्या किसी के बुरे बक्त का साया थे हम?
ये कुछ बातें हमें खाये जाती हैं।

रुह जिस्म को जीने नहीं देती,
क्योंकि उनकी दुआओं में,
मेरे लिये यादे मंगाई जाती हैं।।

हर बार नई तलाश में,
सिर्फ कहानिया पीछे छूट जाती हैं।
बिन कोशिश अधूरी रह गयी जो,
वही काश बनकर रह लगी हैं।।

वक्त को कभी लौटा नहीं सकते पागल
बस एक काम किये जाना है।
कुछ यादों को मिटाना है,
कुछ को बनाना है।
जिन्दगी यही है बस,
चलते जाना है चलते जाना है......

पूजा दी (दीदी)

बैठा है खौफ उसके दिल में,
वो रात–रात को उठती है।
और वो मुझसे कहती है,
कि अजीब आवाजें सुनती है।।

गुर्राता सावन इस बरस,
अनहोनी को लाया है।
टूटने लगे पहाड़ सारे,
घनघोर कलयुग आया है।।

धँस–धँस करके आया पानी,
पुस्ता उसने धंसा दिया।
कुछ बकरी व मेमनों को,
उस मलबे ने दबा दिया।।

तड़पते बिलकते वो मेमने,
जोर–जोर से कराहते रहे।
बचपन की अंतिम सांसो तक,
असहाय होकर छटपटाते रहे।।

उनकी वो आवाजे अब,
रजनीभर को चलती है।
प्रकृति के सामने हैं बेबश हम,
बस यही बात उसको खलती है।।

अब रात–रात को वो सपने देखे,
इन्ही सवालों को बुनती है।
और सदातन मुझसे कहती,
वो अजीब आवाजें सुनती है।
वो अजीब आवाजें सुनती है।।

आजादी आखिर क्या?

जो देखा ना है मैंने,
या जो देख रहा हूँ मैं।
आजादी की अनभिज्ञ परिभाषा को,
कबसे सेक रहा हूँ मैं।।

हुकुमत की दुनिया ताज,
जबसे आजादी के सिर आया है।
आंतक व भष्ट्राचार का,
सवाल तबसे गरमाया है।।

आखिर क्या है आजादी ?

सत्ताधारियों की तानाशाही,
या घोटालो की वाहवाही।
गरीब के कटोरे की गहराई,
या भष्ट्राचार की पुरवाई।
रक्षण–भक्षण का जाल,
या आंतक की है खाई।।

आखिर क्या है आजादी?

जुगाड़ियों का घोंसला,
या भष्ट्राचारियों का हौंसला।
संविधान की आहूति,
या जनतन्त्र का घोंटा गला।।

आखिर क्या है आजादी?
सवाल अन्तःकरण का है जगा ।।

जनतन्त्र का “लोकपाल“,
या सरकारी ”शोक–पाल”।
राम मैदान में फेंकी चाल,
या ”अन्ना“ आन्दोलन का
सवाल।।

आखिर क्या है आजादी ?

"राजनिति आखिर क्यों?"

सपने सजाता विज्ञान के,
भविष्य कहाँ है सब जान के।
आविष्कारों व खोज की,
मन सकंल्पना ठान के।।

संयुक्त कल्पनाओं की उडान से,
चलता रहा वह शान से।
मस्त–मोला था वो,
तृप्त इसी पहचान से।।

आखिर!
इक दिन हवा ने रुख मोडा,
सावन भी भीषण हुआ।
शरद भी तपने लगा,
कभी सूर्य पूर्व,
तो कभी पश्चिम से निकलने लगा।
आखिर!
वैज्ञानिकी सपने सजाता "हरशू"
राजनिती में कूद पड़ा।

आखिर क्यों?

यही पूछा समाज ने,

मुझे पहाड़ बचाना है,
क्लर्कों से लेकर सरताजों की।
कुर्सियों को हिलाना है,
बस इक हड़कंप मचाना है।
मुझे राजनीती में आना है,
मुझे राजनीती में आना है।

पहाड़ो में शिक्षा का माहोल,
"वन प्राणियों" को समाज का रक्षण।
"गृहस्थी" बहिनों को "केन्द्रीय ज्ञान",
लेकर दिखाना है।
मुझे राजनीती में आना है।।
मुझे राजनीती में आना है।।

बसूलियों पर कंटकों का ठप्पा,
जुगाड़ियो को को निलम्बन का
धक्का।।
अपना हक, अपना कर्तव्य,
सबका याद दिलवाना है।

मुझे इस पहाड़ को एक
व्यवस्थित पहाड बनाना है।
मुझे राजनीती में आना है।।
मुझे राजनीती में आना है।।

मुझे धर्मवाद, भाषावाद, नस्लवाद,
लिंगवाद, पूँजीवाद, जातिवाद,
क्षेत्रवाद व फेकल्टीवाद को ,
पहाड़ो से दूर भगाना है,
एक स्वर्णिम माहोल बनाना है।

इस–लिये, मेरे पहाड़,
मुझे राजनीती में आना है,
मुझे राजनीती में आना है।।

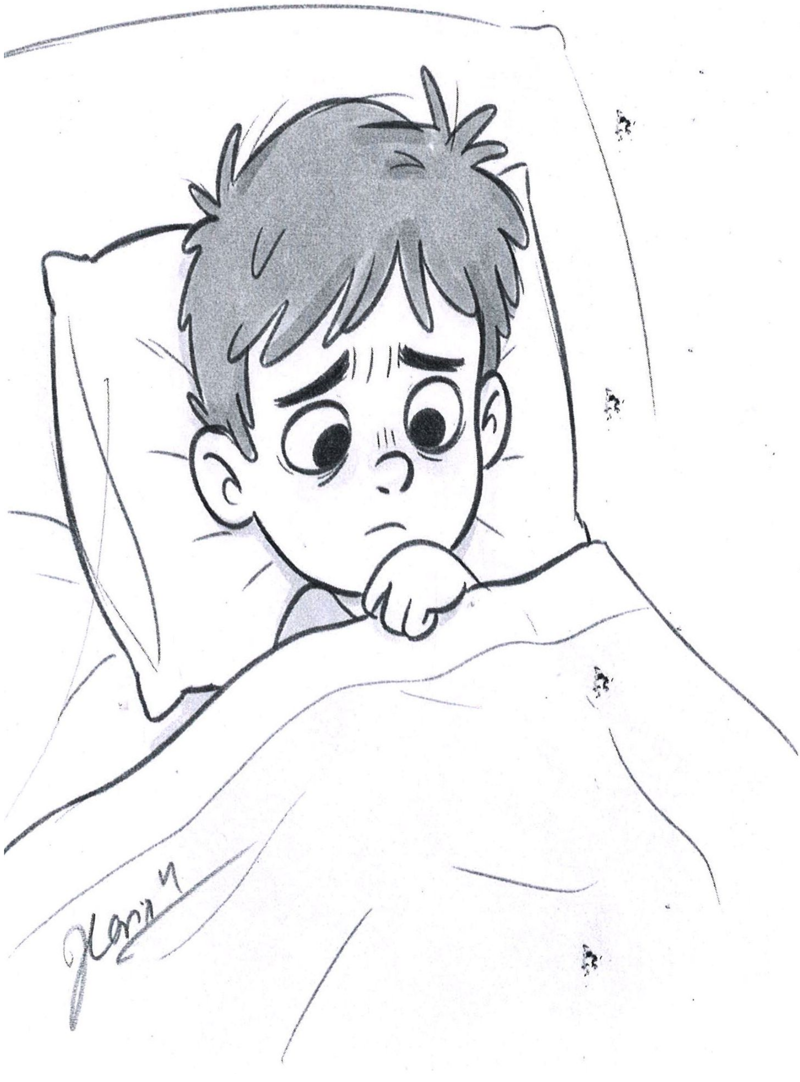

निशान ए कलम

इक कोरे कागज पर,
लेकर मैं कोरी कलम।
सपने सजाती चुड़ाओं* के,
लिखने लगी मेरी कलम।।

ख्वाब कभी उड़ने का,
ख्वाब कभी डूबने का।
ख्वाबों के कोरे ख्वाबो में,
ख्वाब था कुछ कर दिखाने का।।

आये प्राणधार और बोले–
"बोलता है करता नहीं,
तू लिखता है, पर दिखता नहीं"।

मै बोला "बाबू जी" –
हम कागज पर कल्पनाओ के,
गहरे निशान बनाया करते हैं।
यथार्थ में रह कर भी,
ख्वाबों को सजाया करते है।।

वो वक्त जरूर आयेगा,
रिमझिम–रिमझिम वर्षा लायेगा।
जो इस कागज पर लिखे,
इन शब्दो के गड्डो को,
चुप–चुप भरते जायेगा ।।

तब चमकेगें ये स्वर्णिम अक्षर,
लिखे मेरे इन पन्नो पर ।
राष्ट्र–भरोसा टिक जायेगा,
मेरे नाजुक कन्धो पर ।।
और कहेगी सारी दुनिया,
"बोलता है, करता भी है,
लिखता है दिखता भी है "।।

चुड़ाओं*– पहाड़ की चोटी

<u>लालसा</u>

ख्वाब, जो सोने न दे।
उम्मीद, जो टूटने न दे।
जिम्मेदारी, जो मचलने न दे।
संकल्प, जो हारने न दे।
अच्छाई,जो पिघलने न दे।
तलाश, जो रूकने न दे।
सच्चाई, जो झुकने न दे,
हमराई ,जो दुःखने न दे।
आंचल, जो तपने न दे।
सहारा, जो गिरने न दे।
आर्शीवाद, जो फँसने न दे।
ठोकर, जो सहमने न दे।
यदि ये सारी चिजें हम में हों,
तो वो कौन सी हस्ती है,
जो हमे मुकाम तक पहुंचने न दे।।

तड़फाहट

न जाने क्यों किसी का अभी भी इन्तजार है,
पलक झपकते ही,
वो जुल्म याद आते तो हैं।
पर खुली आँखा को,
उन्ही ख्यालों से इकरार है।।

दो पल वफा के न गुजरे,
वे बेवफाई कर बैठे थे।
हँसते–हँसाते ही,
वे रूसवाई कर बैठे थे।।

आखिर न जाने क्यों ये दिल,
मेरा ही गुनाहगार है।
जो फिर भी कहता है,
कि हमें उन्हीं से प्यार है।।

फुरसत से न मिल सके वो कभी,
उनका हर बहाना भी जायज था।
प्यार के बदले झोली में,
कांटे डाल दिये।

क्या उनका ये हिसाब जायज था?

तनहाई भरे सफर में
अबू घुट–घुट कर जीना ही करार है।
आखिर न जाने क्यों?
हमें उन्हीं से इतना प्यार है।।

अंधेरी रातो की की करवटें,
उजाले दर्द की सुबह।
काल कोठरी की सिसकियों,
जगते पलो की झपकियों,
सबकी यही पुकार है,
आखिर क्यो?,
आखिर क्यो?,
हमे उन्हीं से इतना प्यार है।।

रित

प्रेम रित* की रिमझिम– रिमझिम,
देखो वर्षा आयी है।
अब के बरस हम प्यार ना करेंगे,
हमने भी कसम खाई है।।

प्रेम रित के हर दिन का,
पल–पल यूँ सुहाना है।
कभी हम किसी के दीवाने थे,
आज कोई हमारा दीवाना है।।

मेरा उन पर टिप्पणी करना,
उनका हमसे यूँ ही डरना,
ये पहली नजर का नजारा था,
उनको हमसे प्यार हो गया,
हाय! मैं तो बस आवारा था।।

फिर हल्के–हल्के बातें करना,
तब रात–रात बतियाना था।
अब छोटी–छोटी बातो पर,
मल्लिका का गुस्सा हो जाना था।।

कभी मेरा उनसे वो,
कभी उनका मुझसे,
बस रूठना–मनाना था।
इन नाटी–नाटी बातों से,
हमें तो प्यार का मँझर पाना था।

इक दिन सजनी यूँ रूठी,
बात हमारी त्यों छूटी तो।
जी तो दोनो रहे थे,
न जाने सांसे हमारी किसने लूटी।।

अब मेरी यादों का उनको,
और उनकी यादों का मुझको,
बस हंसाना और रूलाना था।
इन छोटी–छोटी बातो से
बिछुडन का वक्त बिताना था।

अब हर राह, हर गली का,
मेरे लिये बन्द जाना था।
न उनका हमें पाना था,
न मेरा उनको मनाना था।

उनका दूर हो जाना था,
और मेरा मजबूर हो जाना था।

रित– रीती या परंम्परा

ये महोब्बत भी क्या है

गुजर गये वो जमाने,
जब उन्हे हम से महोब्बत थी।
हर रोज संदेशो की बरसात,
तब तो हाय! कयामत थी।।

हम उनसे अनजान थे,
फिर भी पागलपन की हद थी।
हजारों सपने संजोलिए क्योंकि,
उन्हीं की इजाजत थी।।

उनसे हसीन कोई और न था,
हम से हसीन कोई और।
उनसे नादान कोई और न था,
हमसे नादान कोई और।।

आखिर ये महोब्बत भी क्या है?

भावनाओं का सागर,
या दिलों के खिलौने।

कोई खेले, कोई खिलवाये,
काई मारे, कोई मरवाये।।

लाखो कहानियाँ बयाँ हैं,
हर पिछली सदी की।
किसी को मौत,
तो किसी की जिन्दगी की।।

ये महोब्बत भी क्या है?
ये महोब्वत भी क्या है?

प्यारी–सी गुड़िया

इक थी गुड़िया प्यारी–सी,
मेरे लिये पराई–सी।
दुनिया खिल उठे उसे देख,
वो हमें देख घबराई–सी।।

हम तो सब–कुछ उसे बताते,
वो अपने दिल की कुछ ना सुनाती।
जब भी गुस्सा आये उसको,
काले तीखे नयन तो दिखाती।।

अपनी होने के बावजूद भी,
वो हमारे लिये पराई–सी।
इक थी गुड़िया प्यारी–सी,
वो हमें देख घबराई–सी।।

अचरज करती बाते उसकी,
जब माफ मुझे कर देती वो।
हर कोई रौब जमाये उस पर,

न जाने कैसे सह जाती वो।।

क्या होगी,
वो आखिरी उम्मीद मेरी,
जिसके लिये बना हूँ मैं।
बस पाना उस गुड़िया को है,
अब इन्ही बातो में समा हूँ मैं।।

ए दोस्त!

ए दोस्त!

कभी किसी इन्सान से,
सच्ची महोब्बत हुई क्या?
कभी इश्क के जहाँ की,
नजाकत दिखी है, क्या ?

खैर तुम्हें क्या पता,
तुमने भी की होगी खता।।

ए दोस्त!

कभी किसी चाहने वाले का,
सपना देखा है क्या?
कभी किसी पराये को,
अपना मानकर देखा है, क्या?

खैर तुम्हें क्या पता,
तुमने भी की होगी खता।।

ए दोस्त!

कभी किसी कि यादो में,
मुस्कराये हो क्या?

कभी किसी की खुशी में,
खिलखिलाये हो क्या?

खैर तुम्हें क्या पता,
तुमने भी की होगी खता।।

ए दोस्त !!
कभी किसी के लिये,
रोये हो क्या?
कभी किसी के ख्यालों में,
खोये हो क्या?
खैर तुम्हें क्या पता,
तुमने भी की होगी खता।।

कैसे जियूँ

इस निर्मम समाज के,
किस पर्दे में रहूँ।
माँ मैं कैसे जियूँ,
माँ मैं कैसे जियूँ।।

गर्भ में मुझ पर,
तेरा ही था साया।
इस निर्मम समाज ने,
तेरा परीक्षण करवाया।।

बच्ची का जन्म
घर में मातम–सा छाया।
लाड़ली के बदले,
तब लतखोर बनाया।।

कभी "बालिका वधू" तो,
कभी बनी "घरजाया"।
कभी "निर्भया" तो,
कभी "मुनिया" बनाया।।

बचपन से जवानी का सफर,
माँ मैं कैसे जियूँ,
माँ मैं कैसे जियूँ।।

कभी घर की हिंसा,
कभी सड़को का किस्सा।
मिल न पाया समाज का,
मुझको सुलभ्य हिस्सा।।

अब इज्जत की कौन–सी,
चादर ओढ़ के रहूँ
माँ मैं कैसे जियूँ,
माँ मैं कैसे जियूँ।।

रोशन सवेरा

खैरातो की बस्ती से,
थोड़ा–सा माँग लाया हूँ।

महोब्बत तो हैं मुठठी भर,
लेकिन महोब्बत लुटाने आया हूँ।

लेकर दिया कलाई में,
चाँद तारों की गवाही में।

अन्धेरी रात सबको,
सूरज में दिखाने आया हूँ।

महोब्बत तो है मुठठी भर,
लेकिन महोब्बत लुटाने आया हूँ।।

चौले सबके कीचड़ सनै,
खादी, खाकी से भरमाया हूँ।

ताकत तो है गुठी भर,
लेकिन स्वराज देने आया हूँ।

अंधकार की गुहाओं में,
चेतना जगाने आया हूँ।

तेरा हक बस तेरा है,
बस हक दिलवाने आया है।।
खैरातो की बस्ती से,
थोड़ा–सा माग लाया हूँ।

खैरातो–गरीबों
गुहाओं–गुफाओं

सौदागर

जब मम्मी ने प्यार किया,
तब तो कोई सौदा नहीं।
पापा का दुलार मिला,
तब तो कोई सौदा नहीं।।

फिर क्यों तू सौदागर बन बैठा,
थोडा प्यार के बदले,
अपना दिल–ओ–जॉ गवा बैठा।।

दौड़ भागते मस्ती करते,
नाचे गाये हम खोली* में।
कितना सुन्दर था वो बचपन,
खुशिया भरी झोली में।।

दादा–दादी के आँखों का तारा,
तब तो कोई सौदा नहीं।
दोस्ती संग बचपन गुजारा,
तब तो कोई सौदा नहीं।।

फिर क्यों तू सौदागर बन बैठा,
थोडा प्यार के बदले,
अपना नींद–चैन सब गंवा बैठा।

इतने सारे अपने तेरे,
अपनो को ही खो बैठा।
उस बैगाने के गम में,
न जाने तू क्यों रो बैठा।।

बड़ गयी लालसा तेरे प्यार की,
मतलब का सौदा कर तू बैठा।।
अपना नीद–चैन–साँस गंवाकर,
सौदागर तू बन बैठा ।।

खोली–छोटे कमरों वाली जगह

दोस्ती

तेरा यूँ खिलखिला के हँसना,
अच्छा लगता है।
गिर–गिर कर उठना नजरो में तेरे,
अच्छा लगता है।।

खुलकर हंसना सीखा हूँ,
मिलकर रहना सीखा हूँ।
संग तेरे जिन्दगी जीने का,
अन्दाज नया सीखा हूँ।।

बदमाशियों पर मेरी,
तेरा चुप–चुप कर डॉटना।
अच्छा लगता है,
रोकने के बावजूद तेरा,
यूँ हमसे दोस्ती करना,
अच्छा लगता है।।

उत्तार चढ़ाव है जिंदगी,
तेरा भी तर्क देना,
अच्छा लगता है।
मुश्किल पहेली है जिंदगी,
तेरा यूँ समझाना,

अच्छा लगता है।।

आप खुद का नजरिया बदल गये,
तो हंसी मजाक के भी पल गये।
शायद गुजर गया अच्छा वक्त,
सोचकर हम भी चल दिये।।

आज तेरे ही रहम से,
दोस्ती का बन्धन सच्चा लगता है।
शिवा मेरे संग सबके,
तेरा यूँ खिलखिला के हसँना,
अच्छा लगता है।।

बेवफा दुल्हन

लाल चोले में लिपटी वो,
चली नया संसार बसाने।
कल तक किसी को रूला के,
अब कल किसी को हँसाने।।

लपेटकर अतीत की पोटली को,
वो कहीं दूर धरा में गाढ़ गयी।
मेरी नजरो में, "मैं",
या अल्लाह, उसकी नजरो में वो सही।।

लाडली थी माँ–बाप की,
लाडली बनकर दिखाया।
कसमें तो खाई मेरे संग थी,
लेकिन श्रृंगार उसका सजाया।।

खुशी थी घरवालो की,
वो हामी उनको सौंप गयी।
आखिर इस छोटे से दिल में,
एक खंजर वो भी घोंप गयी।।

टूट चुका में घुट–घुटकर,
अन्धेरा–सा छा गया।
क्या ऐसा रह गया मुझमें,
जो उसको, उनमें भा गया।।

उसकी मुस्कानी यादों सें,
अब जहर–जहन से निकलता है।
पल–पल खुद को अकेला पाकर,
जिस्म मेरा पिघलता है।।

कैसे देखेगी वो दुल्हन बनकर,
खुद को खुद की आँखों में।
क्या मिलेगा उसको ऐसा प्यार,
जो मिला था मेरी बाँहों में।।

छोड चुकी तुझको वो कब का,
क्यों जोर उस–पर लगता है।
तकदीर में ना लिखा हो जो,
फिसल मुठ्ठी से जाता है।।

कैसे घरवाले मेरे,
जो पल–पल मुझे सहलाते हैं।

कहते है यूँ मायूस ना हो,
एक दुल्हन तुझे भी लाते हैं।।

उसको क्या पता यारों,
मेरे दिल का हाल मैं ही जानू।
आग लगी है खिलते बगीयों में,
कैसे में पानी डालूँ।।

सिकुड–सिकुड़ कर सांस मेरी,
जिन्दा छोड़ मुझे जाती है।
मेरे मौला बता दे जरा,
मुझे मौत क्यों नहीं आती है।
मुझे मौत क्यों नहीं आती है।।